❑व्यंग्य

म्रित्युरासौ

शंकरसिंह राजपुरोहित

व्यंग्यकार परिचै

शंकरसिंह राजपुरोहित रौ जलम 12 सितंबर 1969 में राजस्थान रै पाली जिलै रै आऊवा गांव में होयौ। आऊवा गांव सन् सत्तावन रा गदर रै गांव रै रूप में चौताळै चावौ। आपरा दादोसा हमीरसिंहजी, बिज्जी (विजयदान देथा) री 'बातां री फुलवाड़ी' री कथावां गांव री हथाई माथै सुणावता, जिणसूं विद्यार्थी जीवण में इज आपनैं राजस्थानी सूं लगाव होयग्यौ। आप व्यंग्यकार, कवि अर राजस्थानी उल्थाकार रै रूप में ख्यातनांव है। संपादन-कौशल में ई सिद्धहस्त। इग्यारवीं कक्षा में भणती बगत राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री पत्रिका 'जागती जोत' में कवितावां अर आवरण छप्या। इणी अकादमी रौ 'पैलौ भत्तमाल जोशी महाविद्यालय पुरस्कार' (1989) आपरै आलेख 'राजस्थानी राखियां, रैसी राजस्थान' नैं मिळ्यौ। आप केई बरस पत्रकारिता करी अर पछै आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान, गंगाशहर में शोध अधिकारी रैया। राजस्थानी में 'सुण अरजुण' व्यंग्य-संग्रै अर 'आभै रै उण पार' कविता-संग्रै छप्योड़ौ। राजस्थानी रै पखवाड़ियै छापै 'मरुधर ज्योति' अर त्रैमासिक पत्रिका 'गणपत' रौ कीं बरस संपादन कर्‌यौ। राजस्थानी कवि-सम्मेलन रै मंच रा सबळ हस्ताक्षर।

आप राजस्थानी उल्थाकार रै रूप में ई आपरी ऊरमा दिखाई है। राजपुरोहित केई पोथ्यां रा राजस्थानी उल्था कर चुक्या। इणां में साकेतानंद रै मैथिली कहाणी-संग्रै 'गणनायक' अर ख्यातनाम उपन्यासकार कमलेश्वर रै हिंदी उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' रौ राजस्थानी उल्थौ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं छप्यौ। इणी भांत पॉस्कल एलन नाज़रेथ री 'गांधी'ज आउटस्टैंडिंग लीडरशिप' रौ राजस्थानी उल्थौ 'महात्मा गांधी री बेजोड़ आगीवांणी' सिरैनामै सूं राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर छाप्यौ। मैथिली कथा-संग्रै 'गणनायक' रै उल्थै सारू आपनैं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ 'राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार' (2010) मिळ्यौ। व्यंग्य-संग्रै 'सुण अरजुण' राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रै 'पैली पोथी पुरस्कार' (1996) सूं पुरस्कृत होयौ। राव बीकाजी संस्थान रै 'राजस्थानी प्रोत्साहन पुरस्कार' (2003) अर नगर विकास न्यास, बीकानेर रै 'राजस्थानी पीथळ पद्य पुरस्कार' (2006) समेत केई इनाम-इकराम आपनैं मिळ्या।

पाठ-परिचै

पाठ्यक्रम में सामल व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' लेखक री चरचित व्यंग्य-रचना है। इणमें लेखक म्रित्यु रै उपरांत आपरी खुद री, आपरै घरवाळां री अर दुनियां री मनगत रौ सांतरौ खुलासौ कर्‌यौ है। व्यंग्य, लेखक रै मरण सूं सरू होवै पण छेकड़ जावतां पाठक नै ठाह पड़ै कै उणनैं तौ रात रा सूत्यै नैं मरण रौ आळ-जंजाळ आयौ हौ, हकीगत में तौ वौ पाठकां रै भाग रौ जींवतौ-जागतौ बैठ्यौ है। इण आळ-जंजाळ वाळै सुपनै रै टूटतां ई लेखक नैं आपरौ नांव अर मरण री खबर अखबारां में नीं छपण रौ रंज ई है। लेखक आपरै इण व्यंग्य रै मार्फत मरण वाळै प्राणी रै पेटै दुनिया री मनगत दरसायी है। आज री भागदौड़ भरी जिंदगाणी में लोगां री व्यस्तता, किणी री मौत री खबर ई अखबारां सूं ठा पड़ण री मजबूरी, छपास रा रोगियां री आफळां, स्वारथ रा भायलाचार रै सागै अंतिम-संस्कार में सामिल होवणिया लोगां में अेकरकै उठतै मुसाणियै बैराग अर बारै आयां पछै 'वै ई घोड़ा अर वै ई मैदान' वाळी बातां माथै करारौ व्यंग्य करीज्यौ है। लेखक आ रचना इण ध्येय सूं लिखी लखावै कै आपसी समाजू-रिस्ता, आपां रा सीर-संस्कार अर म्रित्यु जैड़ै मौकै माथै आपां री मानवी संवेदनावां बणी रैवै।

म्रित्युरासौ

म्हैं मरग्यौ हौ। सुरगवास होयौ कै नरकवास, इण गांगरथ में कांई सार! म्हैं तौ इत्तौ ई सुण राख्यौ हौ कै संसार असार है अर मरण में इज सार है। इण कारण म्हैं सार नैं धार चुक्यौ हौ। अबै आप कैवोला कै थूं मरियां पछै ई म्हारौ लारौ क्यूं नीं छौडै! जे थूं मरग्यौ हौ, तौ पछै औ 'म्रित्युरासौ' कांई थारौ कोई चोटीकटियौ चेलौ सिरधांजळी सरूप लिख्यौ है?

अरे हुकम, म्हैं आपनैं फकत म्हारै मरण रा समाचार भुगताया है अर आप मर्‌यौड़ै मुड़दै में ई मीन-मेख काढण लागग्या? कांई आपनैं म्हारी आतमा री मुगती सूं कीं तल्लौ-मल्लौ कोनी। कांई आप म्हारी मुगती सारू दो मिंट रौ मौन ई नीं राख सकौ? इण सारू आपनैं किणी सिरधांजळी सभा रौ सांग रचण री जरूत कोनी, क्यूंकै बठै तौ आप अेक-डौढ मिंट ई आंख मींच्योड़ी अर मूंन धार्‌योड़ी नीं राख सकौ। अठी-वठी बाका फाड़ता 'ॐ सांति-सांति' करण सारू ताखड़ा तोड़ौ, जाणै पगां रै कीड़ियां चैंठती होवै। मरणियौ आदमी जींवतौ हौ जित्तै तौ आप उणरौ माथौ चाटता नीं थाकता, आंती आयनै आगलै नैं ई सिरकणौ पड़तौ अर उणरै मरियां पछै आप आपरै इष्ट सूं उणरी आतमा री मुगती सारू थोड़ीक सिफारस ई नीं कर सकौ? इण भटकती आतमा री बात माननै आप तौ बैठा हौ जठै इज पसर जावौ अर इणरी मुगती सारू ईस्वर सूं नीं तौ आपरी आतमा सूं इज प्रार्थना कर लिरावौ। आतमा सो परमातमा अर परमातमा तौ म्हारी आतमा री मुगती सारू त्यार ऊभौ है, पण आपरी आतमा री हरी झंडी मिल्यां बिना म्हारौ औ आतम-वियांण आगै नीं सिरक सकैला।

म्हनैं ठा है, म्हारै मरण सूं किणी रौ सांस कोनी अटकै, पण म्हारी आतमा तौ अजै ई भटकै है। म्हैं वौ दरसाव कियां भूल सकूं हूं, जद म्हारै मरियां सूं पैलां ई म्हारै मरण री त्यार्‌यां बरतीजण लागगी ही। छैली सांसां सूं पैली ई म्हनै मांचै सूं हेठै पधराय दियौ हौ। पिलंग सूं सिरख-पथरणा सांवटीजग्या हा अर अेक लीरझीर दरी आंगणै बिछाईजगी ही। बडेरां रौ कैवणौ हौ कै मांचै माथै सांस निकळ्यां नरक में ई ठौड़ नीं मिळै। जे म्हनैं इण बात रौ पैली ठा होवतौ तौ घर में कदैई मांचौ ई नीं बपरावतौ। सगळां नैं नीचै ई सुवण अर सुरग में लेय जावण रौ पुख्ता बंदोबस्त करतौ। पण अबै पछतायां कांई होवै।

मरती बगत म्हारा दोनूं बेटा डील सूं म्हारै कनै ऊभा हा, पण आतमा वांरी ई और कठैई भटकै ही। म्हारै औळै-दौळै औरूं ई केई लोग ऊभा हा, पण आजकाल लोग मुड़दै नैं बाळण री त्यारी पछै करै, अखबार में 'सोग-संदेस' अर 'तीयै रौ बैठक' रौ विग्यापन फोटू समेत पैली देयनै आवै। म्हारौ छोटियौ छोरौ इणीज सुभ काम में लाग्योड़ौ हौ। वौ म्हारै अेलबम री हजारूं फोटुवां मांय सूं अेक लाखीणी फोटू पैली ई छांट राखी ही— फेंटौ बांध्योड़ी। बाल उड्योड़ा होवण सूं म्हैं आणै-टाणै माथै फेंटौ बांध लिया करतौ। म्हैं ई कांई आपरौ किणी गंजै सूं भेंटौ कै फेंटौ पड़ै तौ आप ई देख लीजौ, कोई दुरंगौ, कोई पिचरंगौ, कोई छुरंगौ फेंटौ बांध्योड़ौ लाधसी। भांत-भांत री टोपियां तौ वांरी टोपाळी नैं सांतरी ढाकी ई राखै, पण फेंटै री आब अर फाब न्यारी है। फेंटौ तौ बियां म्हैं ब्यांव री बगत ई बांध्यौ हौ, पण उण बगत तौ म्हारै बाल सांघणा हा। खाल तौ ब्यांव रै पछै ई खंचै अर पछै ईज बालां री गरुड़-पुराण बंचै। खैर, ब्यांव री बगत ई म्हारा मोकळा फोटू खांचीज्या हा, पण वौ 'हरखै बनड़ै' रौ फोटू तौ इण दुख री घड़ी में दिरीज नीं सकतौ हौ। म्हारा बिस्तरा गोळ होवै हा, इण वास्तै छुरंगै री ठौड़ म्हारौ बेटौ गोळ साफा वाळौ ईज फोटू छांट्यौ। म्हैं उणनै उमर-भर डफोळ समझतौ रैयौ, पण मरती बगत म्हनैं वौ खासौ अकलवान लखायौ। म्हारी जूती उणरै पग में ज्यूं ई पूरी आवती लागी, म्हारी सांसां लेखै लागगी।

म्हारै मरियां पछै घर में कूका-रौळौ मचग्यौ। म्हैं जींवतौ हौ जित्तै घरवाळा मांय रा मांय धमीड़ लेय लेवता, पण अबै तौ वै चौड़ै-धाड़ै लेवण लागग्या हा। आड़ोसी-पाड़ोसी भेळा होय थावस बंधावण नै आयग्या। बियां तौ

वांनै मरण री ई फुरसत कोनी, पण अबार केई दिनां सूं वै म्हारै मरण री झाक में हा। सुख-दुख में पाड़ोसी ई आडा आवै, सो वै ऊभा ई आयग्या।

लोक में कैवत है कै जलम तौ रात रौ अर मरण परभात रौ। पण म्हैं मर्‌यौ जणै ना तौ रात ही अर ना परभात। सिंझ्या री चारेक बजी ही। औ बगत म्हारै चाय पीवण रौ होया करतौ, पण अबै कुण म्हारौ बाप चाय चढावै हौ अर वा ई मुड़दै नैं पावण सारू? म्हारी लोथ नैं बाळ्यां बिना तौ पाड़ोस्यां रा चूल्हा ई कोनी जग सकै। स्याणा-समझणां तोड़ काढ्यौ कै दाग तौ दिन बधियां पैली देवां जणै होवै, नींतर रात-भर लास नैं रुखाळणी भारी व्है जावैला। वांरी आ बात म्हारै पाड़ोस्यां अर भाईबंधां नैं ई अणूती दाय आयी अर वै म्हारै बडोड़ै बेटै नैं सिणिया-बांस अर अरथी री दूजी सामग्री रौ तुरत बंदोबस्त करण री बात भुगतायी। हालांकै वौ मोबाईल माथै बीजी हौ, पण काम म्हारौ ईज सारै हौ। वौ म्हारै किरिया-करम री जुगत जचावै हौ अर आपरा भायलां सागै म्हारी लेखक बिरादरी नैं ई म्हारै मरण रा समाचार भुगतावै हौ।

म्हारौ छोटियौ छोरौ जकै काम में लाग्योड़ौ हौ, उणरौ रिजल्ट तौ अखबार में दूजै दिन दिनुगै आवणवाळौ हौ। आजकल घणकरै लोगां नैं किणी रै मरण-ठरण रौ ठा अखबार सूं इज पड़ै। दूजै दिन तौ विग्यापन रै सागै म्हारी छोटी-मोटी खबर ई छपणी चाईजै! बियां तौ आजकल खबर छपावण सारू सागै विग्यापन देवण रौ ई रिवाज है, पण म्हारी बात न्यारी है। छोरौ म्हारौ सोग-संदेस नीं देवतौ तौ ई म्हारी खबर जरूर छपती, क्यूंकै म्हैं तौ खबरां में इज छोटौ-मोटौ होयोड़ौ हूं। खबरां छपावणिया अर छापणियां रै म्हैं घणौ आडौ आयोड़ौ हूं। वांरी विज्ञप्तियां घस-घसनै म्हारी आंगळ्यां रै आंयठण पड़ग्या। कांई वै म्हारै सारू च्यार ओळ्यां ई मांडण जोगा कोनी। म्हारै मना-ग्यानां तौ म्हारी खबर फेंटैआळी फोटू समेत अखबार रै फ्रंट पेज माथै आवणी चाईजै अर हैडिंग ई म्हारै मन मुजब लागणी चाईजै— ''अबै कुण घड़ैला घड़िया... ?''। म्हारै स्हैर में खबर होवै कोनी, घड़ीजै। इण वास्तै उणनैं 'घड़ियौ' कैवै। कैयां नैं तौ अखबार में आपरौ नांव पढ्यां बिना हाजत ई कोनी होवै। वांनै खबर सूं कीं मतलब कोनी। उसेन बोल्ट ओलंपिक में भलां ई सौ मीटर री दौड़ जीतौ अर भलां ई दौय सौ मीटर री, पण आंरी दौड़ तौ अखबार रै दफ्तर तांईज होवै। कोई खबर नीं बणै तौ उसेन बोल्ट नैं बधाई देवण रौ घड़ियौ ई घड़ काढै।

खैर, 'राम-नाम सत है' रै साथै जद म्हारै म्रित सरीर री अरथी उठण लागी तौ म्हारी भटकती आतमा आनंद-निकेतन में आयोजित अेक ग्यान-गोठ में गोता खायनै पाछी म्हारी अरथी माथै आयनै बैठगी। वा बैठी-बैठी सिंघावलोकन करण लागी। कूड़ बोलनै म्हनैं कोई चुनावी अंदाजौ तौ लगावणौ कोनी, पण पचास-पिचपन लोग तौ पक्का हा। लोग तौ पाणी बतावै जठै कादौ ई कोनी लाधै, म्हैं तौ म्हारी उमर सूं ई कम आदमी बताय रैयौ हूं। इण हिसाब सूं तौ साठ बरसां री उमर पाक्यां पछै ई म्हैं साल दीठ अेक आदमी ई कोनी पकाय सक्यौ। पण म्हारी जाण-पिछाण वाळा सगळा म्हारै ज्यूं कोई बैला थोड़ी ई बैठा हा। जका टाइम काढनै आया हा, वै ई म्हारै लांपौ लगावण री उंतावळ में हा। सिंघावलोकन करती म्हारी आतमा में गादड़ै रै गळैई हुकहूकी ऊठगी। म्हारी आतमा सिंघावलोकन करणौ छोडनै छिद्रान्वेषण करण लागगी।

म्हारी अंतिम-जातरा में सामल लोगां में वै लौग ई भेळा हा, जका मौकौ लाग्यां म्हारी टांग खींचण सूं नीं चूकता, पण आज अरथी रै खांधौ देवण सारू ताता दीसै हा। म्हारी आतमा नैं तौ इणमें ई वांरौ कोई स्वारथ निगै आयौ। 'राम नाम सत है' रै नारै सागै वां लोगां में ई सत वापरग्यौ, जका कदैई हाथ सूं फळी ई कोनी फोड़ी अर ना ई किणी री बाढी आंगळी माथै मूत्यौ, पण आज मसाणियै बैराग रै मिस पुन्न कमावण में पाछ नीं राखै हा। तीन तिलंगा अैड़ा ई हा, जका जींवता-जी तौ म्हारै चींचड़ ज्यूं चिप्योड़ा रैवता, पण अबार म्हारी अरथी सूं अळघा-अळघा आपरी ई गांगरथ गावता चालै हा। म्हारी इण चौकड़ी नैं जाणणियौ अेक जणौ वां मांय सूं अेक नैं कैयौ, ''थे ई अबै पाका पान हौ, अरथी रै खंवौ देयनै पुन्न कमायलौ!''

आ बात सुणनै वौ उण माथै रातौ-पीळौ होवतौ बोल्यौ, ''म्हारी तौ थूं चिंता ई मत कर, थारा फूल चुग्यां बिना म्हैं कठैई कोनी जाऊं। म्हारी मानै तौ थूं लकड़ां रौ गाडौ आगूंच नखायलै भलांई। अै ई तर-तर मूंघा होवै है।''

मारग में चौरायौ आयौ। अरथी नीचै राखीजी। पिंड उछाळीज्या। चौराया माथै अेक पनवाड़ी री दुकान ही। अठै सूं इज म्हैं आथण-दिनुगै मीठै पत्तै सागै लंबी सुपारी रौ पान खाया करतौ। भायलां नैं ई खवावतौ। बुधवार नैं इक्कीसिया गणेसजी सारू मीठै मसालै रौ पान ई अठै सूं इज बंधावतौ। म्हैं जिण हिसाब सूं इण पनवाड़ी रौ पुराणौ अर पक्कौ ग्राहक हौ, उण हिसाब सूं तौ इणनैं अबार दुकान बंद राखणी चाईजती। पण पनवाड़ी नैं कांई मरेठी, इलायची कै पीपरमेंट ज्यूं म्हारै मरण री सौरम थोड़ी आवै ही। म्हनैं मरियां नैं तौ हाल दो-ढाई घंटा इज होया हा। कालै अखबार में सोग-संदेस छपियां पछै सायद दौपारै तांई बंद राखै तौ, पण अबार तौ वौ म्हारी अंतिम-जातरा में सामल कीं पान रा रसियां नैं फटाफट पान पकड़ावण में लाग्योड़ौ हौ। केई लोग पैली सूं अठै इज ऊभा म्हारी बाट जोवता हा। अठै सूं इज क्यूं, मुसाण पूगतां-पूगतां सित्तर-पिचहत्तर जणा होयग्या हा। सगळा आप-आपरौ जरूरी काम सलटायनै आया हा। जे नीं आवता तौ ई म्हैं किसौ वांनै पूछण नैं जावै हौ कै आपरै अैड़ी कांई फाडी फंसगी ही ? छोरौ सौ-सवासौ नैं फोन करया होवैला अर म्हारी उमर सूं बेसी लोग मुसाण पूगग्या हा। डूबतै नैं तौ तिणकलौ ई घणौ, मर्‌यौड़ै नैं और कांई चाईजै ? लांपौ तौ घरवाळा लगासी। कपाळ-क्रिया ई वै इज करैला। लारै आया लोग तौ म्हनैं थेपड़ी देवण रा सीरी हा। इण वास्तै तौ वांनै घंटौ भर अडीकणौ पड़ैला। वै टाइम पास रै हिसाब सूं निरगुट सम्मेलन ज्यूं च्यार-च्यार, पांच-पांच रौ गुट बणायनै घरविध सूं लेयनै देस-विदेस री घाण-मथाण में उळझ्योड़ा हा। केई सूना-मूना ई बैठ्या हा। वां में स्यात मुसाणियौ बैराग जागग्यौ हौ। औ बैराग ई जबरौ होवै। फगत किणी मुड़दै नैं बाळण वाळी टैम ई उठै। बारै आयां पछै सोनै पाणी रौ छांटौ लागतां ई मसाणियौ बैराग छू-मंतर। आदमी पाछौ आपरै गोरखधंधा में अळूझ जावै। तीन-च्यार जणा लक्कड़ जचावण में घरवाळां री मदद ई कर रैया हा। इण काम रै सागै मुड़दै रै हरेक क्रिया-करम में वां लोगां री मास्टरी ही। म्हारी चिता सूं पैलां ई म्हैं वांनैं केई वेळा लकड़ा जचावतां देख चुक्यौ हौ। अबार लग वै केई जणां रौ कल्याण कर चुक्या हा। मरणियै रा घरवाळा वांनै गरजां करनै ले जावै। वै मुड़दै री कद-काठी देखनै बळीतै रौ अंदाज लगाय लेवता। म्हारै जिसै मुड़दै आदमी सारू तौ चिता चिणणी वांरै डावै हाथ रौ खेल हौ। म्हैं डील सूं मुड़दौ जरूर हौ, पण म्हारा हाड चीढा हा। चीढा हाडां सारू चीढी लकड़ी सूं काम कोनी चलै, अेकदम सूकी अर नीमण चाईजै। पण दाई सूं पेट छानौ रैवै तौ वां सूं औ छानौ रैवतौ। वै अेकदम नीमण अर सूकी लकड़्यां ई चिणी ही।

पण ज्यूं ई परिक्रमा देयनै म्हारौ बडोड़ौ बेटौ म्हारै लांपौ लगावण लाग्यौ कै म्हैं पिलंग माथै सूं ओझक नै ऊभौ होयग्यौ। म्हारी आंख खुलगी। म्हनैं मरण रौ इत्तौ डर नीं लाग्यौ, जित्तौ सुपनै में लांपै रौ लाग्यौ। सुपनौ टूटतां ई म्हारी आतमा पाछी ठायैसर आयगी, जकी मांझळ रात में कांई ठा कठै-कठै भटकनै आयी ही। दिनुगै अखबार में फोटू छोडनै म्हारौ कठैई नांव ई कोनी छप्यौ। थे ई बतावौ, पछै म्हारी आतमा नैं सांयती कियां मिळती!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गांगरथ=फालतू झिकाळ, बाधू बंतळ। ताखड़ा तोड़णा=उंतावळ मचावणी। आंती=काठौ कायौ होवणौ, परेसान। वियांण=विमान। फेंटौ=साफौ, पाघ। टोपाळी=भोड, माथौ। सांघणा=घणा, सघन। लोथ=लाश, शव। आंयठण=आइटन, करड़ा छाळा। घड़ियौ=कपोल कल्पित खबर घड़णी। बैला=खाली, ठाला। मुसाण=भोमका। आगूंच=पैलां सूं। तिणखलौ=तृण, तिनकौ। घाण-मथाण=मन में मंथण, अंतर्द्वंद्व। चीढा=करड़ा, आला-गीला। लांपौ=आग लगावणी, बाळणौ। ओझक नै=झिझक नै, डरनै। ठायैसर=जग्यांसर, जथास्थान। मांझळ रात=आधी रात, मझ रात।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में लेखक रौ मूळ ध्येय कांई है?
   (अ) आपरै मित्रां री हंसी उडावणी (ब) म्रित्यु-संस्कार री जाणकारी देवणी
   (स) घरवाळां री चिंता प्रगट करणी (द) मानवी संवदेनावां जगावणी
   ( )

2. 'म्रित्युरासौ' में लेखक नैं आपरी मौत रौ—
   (अ) पैलां ई आभास होयग्यौ (ब) सुपनौ आयौ
   (स) द्रिस्टांत देख्यौ (द) डर लाग्यौ
   ( )

3. शंकरसिंह राजपुरोहित नैं राजस्थानी अकादमी रौ 'पैली पोथी पुरस्कार' किण पोथी माथै मिल्यौ—
   (अ) रुळपट रासौ (काव्य) (ब) सुण-अरजुण (व्यंग्य-संग्रै)
   (स) गणनायक (उल्थौ) (द) आभै रै उण पार (कविता-संग्रै)
   ( )

4. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रै लेखक शंकरसिंह राजपुरोहित रौ गांव आऊवा किण रूप में प्रसिद्ध है?
   (अ) म्रित्यु रौ गांव। (ब) गुणीजनां रौ गांव।
   (स) गदर रौ गांव। (द) गोरड़्यां रौ गांव।
   ( )

5. व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में अखबार में 'सोग-संदेस' देवण सारू लेखक रौ किसौ फोटू टाळीज्यौ?
   (अ) छुरंगै फेंटा वाळौ (ब) गोळ साफा वाळौ
   (स) पिचरंगी पाघ वाळौ (द) धोळा पोतिया वाळौ
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. शंकरसिंह राजपुरोहित रौ जलम कद अर कठै होयौ?
2. 'म्रित्युरासौ' किण विधा री रचना है?
3. 'म्रित्युरासौ' में मौत रौ सुपनौ टूट्यां पछै लेखक नैं किण बात रौ रंज है?
4. लेखक 'म्रित्युरासौ' री सरुआत में सार अर असार किणमें समझै?
5. लोक में कैवत मुजब जलम अर मरण किण समै आछौ मानीज्यौ है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'म्रित्युरासौ' रै व्यंग्यकार री म्रित्यु अर सुरग-नरक नैं लेयनै कांई धारणा है?
2. लेखक आज रै जुग में अखबार में 'सोग-संदेस' री जरूरत क्यूं अर कियां बताई है?
3. लेखक 'म्रित्युरासौ' में आपरै घरवाळां री मनगत बाबत कांई लिख्यौ है?

4. 'म्रित्युरासौ' में शवयात्रा री बगत चौरायै माथै कांई दरसाव है?
5. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रै मार्फत लेखक कांई संदेस देवै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में मृतक रै प्रति लोगां री दोघाचिंती अर मनगत रौ सांगोपांग वरणाव हुयौ है। इण कथन री पुष्टि में आपरा विचार राखौ।
2. ''व्यंग्यकार 'म्रित्युरासौ' रै मार्फत पाठकां रै मनोरंजन रै सागै-सागै वांरै व्यंग्य रूपी चूंठिया भरण रौ ई काम करयौ है।'' इण कथन री विरोळ दाखला देयनै करौ।
3. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रचना बाबत विस्तार सूं आपरा विचार प्रगट करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. म्हैं वौ दरसाव कियां भूल सकूं हूं, जद म्हारै मरियां सूं पैलां ई म्हारै मरण री त्यारयां बरतीजण लागगी ही। छैली सांसां सूं पैली ई म्हनै मांचै सूं हेठै पधराय दियौ हौ। पिलंग सूं सिरख-पथरणा सांवटीजग्या हा अर अेक लीरझीर दरी आंगणै बिछाईजगी ही। बडेरां रौ कैवणौ हौ कै मांचै माथै सांस निकळ्यां नरक में ई ठौड़ नीं मिळै। जे म्हनैं इण बात रौ पैली ठा होवतौ तौ घर में कदैई मांचौ ई नीं बपरावतौ।

2. सुख-दुख में पाड़ोसी ई आडा आवै, सो वै ऊभा ई आयग्या। लोक में कैवत है कै जलम तौ रात रौ अर मरण परभात रौ। पण म्हैं मरयौ जणै ना तौ रात ही अर ना परभात। सिंझ्या री चारेक बजी ही। औ बगत म्हारै चाय पीवण रौ होया करतौ, पण अबै कुण म्हारौ बाप चाय चढावै हौ अर वा ई मुड़दै नैं पावण सारू? म्हारी लोथ नैं बाळ्यां बिना तौ पाड़ोस्यां रा चूल्हा ई कोनी जग सकै।

3. ज्यूं ई परिक्रमा देयनै म्हारौ बडोड़ौ बेटौ म्हारै लांपौ लगावण लाग्यौ कै म्हैं पिलंग माथै सूं ओझक नै ऊभौ होयग्यौ। म्हारी आंख खुलगी। म्हनैं मरण रौ इत्तौ डर नीं लाग्यौ, जित्तौ सुपनै में लांपै रौ लाग्यौ। सुपनौ टूटतां ई म्हारी आतमा पाछी ठायैसर आयगी, जकी मांझळ रात में कांई ठा कठै-कठै भटकनै आयी ही। दिनुगै अखबार में फोटू छोडनै म्हारौ कठैई नांव ई कोनी छप्यौ। थे ई बतावौ, पछै म्हारी आतमा नैं सांयती कियां मिळती!